रेत के हसात

काव्य संकलन

डॉ. अणिमा उपाध्याय

आलोक प्रकाशन

रेत के हसात

काव्य संकलन

C - डॉ. अणिमा उपाध्याय – 2022

आलोक प्रकाशन

पाठकों से

यह नज़मों, गज़लों एवं कविताओं का एक अनुपम संकलन है। जैसे गुलदस्ते में भाँति- भाँति के फूल होते हैं जो साथ होकर भी अपनी पहचान नहीं खोते व अपनी आभा व खुशबू बिखेरते हैं, उसी प्रकार यह संकलन है जो अलग -अलग विधा का होते हुए भी एक साथ है। इसकी हर रचना आप के मन पर अपनी अलग छाप जरूर छोड़ेगी और जो विषय इनमे मैंने उठाए हैं, उनपर सोंचने को मजबूर भी करेगी। इससे पहले भी आपने मेरे कविता संग्रह “सत्य से साक्षात्कार” व “स्पंदन” पढ़े व सराहे हैं उसके लिए आप सभी का हृदय से आभार। मुझे उम्मीद है कि यह काव्य संकलन भी आपको पसंद आएगा.
इस ‘संकलन’ की सभी रचनाएं मेरी “YOU TUBE Channel Dr. Anima Upadhyay” पर मेरी ही आवाज़ में उपलब्ध हैं जिसका लिंक नीचे दिया हुआ है। अगर आप चाहें तो लिंक पर क्लिक कर के मुझे सुन सकते हैं और चैनल को सबस्क्राइब भी कर सकते हैं।
https://youtube.com/playlist?list=PL1l6Y5s4mZVuWj1Wq2YLO-_WmP3Ltaq77

अणिमा उपाध्याय......

विषय तालिका

प्रियतम मेरे आ जाना तुम 5
यह दिल हमारा फाख्ता है 6
तुरबत का पत्थर रह गई 7
एक कोशिश कीजिए 8
निशान 9
काल-चक्र 10
छलावा 11
स्थितिप्रज्ञ 12
एतमाद 13
अल्फ़ाज़ 14
हर एक चेहरा डरा रहा है 15
यह जीवन बहता पानी है 16
ताबूतों के तख्त 17
नारी हिन्द की 18
बसता शिकायतों का 19
कलम और स्याही 20
मुर्दे खड़े हो जाएंगे 21
रेत के हसात 22
फिजाँ बदल गई 23
यादों के लिहाफ़ 24
दरिया-ए- अश्क 25
मिन्नत ना कर 26
शब्दों के अर्थ कविता के क्रमांक से 27

1

प्रियतम मेरे आ जाना तुम

जब खामोशी दम तोड़ दे और परछाईं साथ छोड़ दे,
उस बेला में साथ छोड़ कर मुझसे दूर नहीं जाना तुम,
प्रियतम मेरे आ जाना तुम…

अंधेरा घनघोर सा लगे, पात का हिलना शोर सा लगे,
एक अनछुई सी सिहरन बनकर दिल के पास चले आना तुम,
प्रियतम मेरे आ जाना तुम…

सरगोशियाँ सुनाई ना दें, और महफिलें दिखाई ना दें,
उस पल मेरा हाथ थाम कर मेरा साथ निभा जाना तुम,
प्रियतम मेरे आ जाना…

दिशाहीन गंतव्य हो रहा जीवन लगता व्यर्थ हो रहा,
इस जीवन की नैया को खे भव के पार लगा जाना तुम,
प्रियतम मेरे आ जाना तुम…

सांसें जब ठंडी पड़ जाएँ और धड़कने रुक-रुक जाएँ,
मेरी भूलें बिसराना पर मुझको छोड़ नहीं जाना तुम,
प्रियतम मेरे आ जाना तुम…

विस्मृत थी मैं खोई हुई थी जागी सी पर सोई हुई थी,
उस अनंत अदृश्य विलय में बन कपूर घुल-मिल जाना तुम,
प्रियतम मेरे आ जाना तुम…

2

यह दिल हमारा फाख्ता है

हम सर झुक लें, मान लें, दस्तूर यही है,
बागी हैं हम हमारा तो कसूर यही है.

यह मानते हैं दोस्ती के काबिल, हम नहीं,
पर तेरी हर इक बात के कायल भी हम नहीं.

मत हमकदम हो, साथ मेरे चल ना पाओगे,
अहमक जुदा हो देख लो तुम मार ना जाओगे.

हमें है एतबार तेरी बेवफाई पर,
हर बार फाड़ता है तू नया करार कर.

वो खून भी अगर करें तो पाक साफ हैं,
हम हाल भी जो पूंछ लें तो दागदार हैं.

जिस मोड़ पे तू मुड़ गया था साथ छोड़ कर,
हम आज भी खड़े हैं उसी उजड़े मोड़ पर.

मद मदिरा मय मयकदा शायर की शान हैं,
यह मयकदा तो है मगर, पीना हराम है।

हम उनकी झूठी शान में गुस्ताखी कर गए,
साकी ने जब बताया तो अब इत्मीनान है.

यह दिल हमारा फाख्ता है इसका क्या कसूर!!
कफ़स में पड़ा सोंचता है इसकी शान है.

यह सोंच ही तो 'अणिमा' जी का जंजाल है,
मुतमइन हो जो जी रहे वही कमाल है.

3

तुरबत का पत्थर रह गई

ज़िंदगी की शाम भी, कितनी.. हसीन हो गई...
तू चला आया तो यह फिजा रंगीन हो गई.

सोंच के रक्खी थीं हमने, जमाने की दास्तां...
जब मिले, ना कहा कुछ, आँखें नमकीन हो गईं.

छोड़ के जाना है सबको, इस जहां से मुसलसल...
बात सादी थी मगर, महफ़िल गमगीन हो गई.

हसरतों को पंख देने में लगा दी, उम्र सब...
जब चले तो बस यहाँ, दो- गज़ जमीन रह गई.

फिर मिलेंगे कह के निकले थे, तुम्हारे शहर से,
रास्ते में ही कहीं सांसें यह कामिल हो गईं.

ऐ खुदा तू इतनी ना, उमर दराज़ कर मेरी,
बातों से सहमकर यह बदहवासी कह गई.

ना कोई ख्वाहिश 'अणिमा' ना ही कोई तिशनगी,
ज़ीस्त ऐसी की फ़कत, तुरबत का पत्थर रह गई.

4

एक कोशिश कीजिए

दिल से दिल चाहे मिले ना, पर रवायत के लिए,
साथ में मिल बैठने की एक कोशिश कीजिए.

हम भी अपनी शोखियाँ कुछ महफिले नजर करें,
इससे पहले वो फना हों एक मौका दीजिए.

चश्मे मयगूँ से पिया पर, तिशनगी बाकी रही,
मयकशी की दासतां हमसे बयां ना कीजिए.

लोगों ने हमको क्या समझा ?और कहा आपसे!
छोड़िए... इस बात को कुछ, कैफियत ना दीजिए.

खोए-खोए गुम से बैठे खफा क्यों हैं ए हुज़ूर?
आप रुसवा हो रहे हैं अरे करम कीजिए.

मुंतशिर हूँ मैं 'अणिमा' ब-अंदाज़ -ए -खुमार,
मेरी इस अदायगी का आप लुत्फ लीजिए.

5

निशान

अगर पात्र में पानी रक्खो, वह भी निशां छोड़ता है...
जीवन में मिलने वालों को कोई कहाँ भूलता है.

कुछ निशान गहरे होते हैं, कुछ ज़िद्दी कुछ रह जाते,
यह मिट जाएँ इस कोशिश में, पात्र ही कभी घिस जाते.

नया लेप चढ़ा कर देखो, शायद कुछ दिन छिप जाए...
पर उतरे जो नया लेप तो नीचे दाग नजर आए.

गहरे पड़े निशानों को तुम, ऐसे मिटा ना पाओगे,
जतन करोगे जितना भी, उतना उनको गहराओगे.

बस खामोशी एक दवा है, ज़ख्म नहीं कुरेदना, तुम...
ना बहलाना ना सहलाना घाव नहीं छेड़ना तुम.

समय के साथ ही ढल जाएगा ऐसा भी हो जाता है,
गौर से उसको देखोगे तो हल्का नज़र वो आता है.

यही सत्य सनातन ‘अणिमा’ घाव सभी दे जाते हैं...
पर घावों को भरने वाले विरले ही मिल पाते हैं.

6

काल-चक्र

मानव अब मानव का दुश्मन, कुछ भी बोलो तो हो अनबन,
धर्म सिखाने वाले करते हिंसा और धर्म-परिवर्तन.

भूले शील-अश्लील का अंतर, कलयुग का यह जंतर-मंतर,
काल का चक्का घूमा ऐसा कि दिख रहा सूअर भी भैंसा.

दिन को रात, बताने वाले... सबकी नींद उड़ाने वाले,
आवाज़ें दबा देते हैं, तिल का ताड़ बना देते हैं...

जनता में सरगोशी तो है पर, छाई खामोशी क्यों है!!
हर घाव नासूर बन गया कोई पुराना दर्द बन गया,

अब यह दर्द हवाओं में है यह हर तरफ फ़िज़ाओं में है,
इक-दूजे पर शक करते हैं, हिंसा और नफरत करते हैं.

कैसा दीख रहा है मंज़र भाई-भाई को भोंके खंजर,
लकड़ी जैसे चीर रहे हैं, इक -दूजे के अस्थि-पंजर...

यह कैसा अधर्म हो रहा? मानव धर्म नगण्य हो रहा,
सहिष्णुता और भाईचारा सब, कहीं कब्र में दफ्न हो रहा.

हा!! सत्ता की भीषण अग्नि में सारा यह विश्व जल रहा,
सूरज के तपते रथ जैसा... देखो कैसा वक्त चल रहा...

7

छलावा

जो तारीखों में बंद हुए वो किस्से... फिर से ना खोलो,
बस अपनी जेबें भरने को तुम, भावनाओं से ना खेलो.

यह माना यह सब दिखलाकर तुम बड़े इनाम बटोरोगे,
पर कौमी हिंसा को कब तक, तुम यूं ही और निचोड़ेगे.

उन दर्दनाक चीखों को तुम, परदे पर जीवंत दिखलाते,
गुजरात, गोधरा, काश्मीर चित्रित करके क्या सिखलाते?

खूनी धब्बों से देश सना हर एक ने उसको धिक्कारा,
कौमी हिंसा और लूट-पाट अब तो इससे हो छुटकारा.

क्या निर्वासित जो लोग हुए उनको घर वापस पहुंचाया?
सत्ता में बैठे लोगों ने... बस जनता को है बहकाया.

सब बिके हुए हैं लोग यहाँ, सभी तो यहाँ लाभार्थी हैं,
हर बार चुनावों में उठती यहाँ प्रजातन्त्र की अर्थी है.

औरों के कहने पर जब तक, तुम कदम बढ़ाते जाओगे,
वो तो आगे बढ़ जाएंगे, तुम दल-दल में गड़ जाओगे .

अब तो जागो अब तो चेतो, अब और छलावा ना सहना,
सबसे मिलकर ये देश बना सबको ही मिलकर है रहना.

8

स्थितिप्रज्ञ

यह तड़ाग तालाब कीचड़ से भरे हैं,
सांस लेना भी यहाँ दूभर हुआ है.

जो सभी मंडूक कूपों में भरे थे,
अब उन्हीं का राज यहाँ चल रहा है.

नफ़रतों के सिलसिले को देखकर तो,
कालभैरव भी, ठठाकर हंस रहा है.

गीध और सियार भी बेचैन हैं सब,
जल्द ही जलसा... भरेगा लग रहा है.

ढह गई इमारतों की लकड़ियों पर,
देगची में जाने क्या? खड़क रहा है.

हर तरफ अजब सी एक शांति है...
फिर भी दिलों में तूफान उठ रहा है.

अब ‘अणिमा’ बा- खबर कैसे रहें हम!!
खबर से ईमान अपना डिग रहा है.

9

एतमाद

हमें किसी से गिला नहीं है हमें अकेला ही छोड़ दो तुम,
ना दूर होगी यह फिक्र उलझन, हमें परीशां ही छोड़ दो तुम.

जो टीस दी है अहले जहां ने, वो कम ना होगी खलिश हमारी,
जिन राहों पे हम चले मुसलसल, वो जानते हैं यह बात सारी...

तक़दीर को हम ताबीर समझे, इस गलत-फहमी को तोड़ दो तुम,
तन्हाई हमको है रास आती, अकेला जीने को छोड़ दो तुम.

ना मेरा माज़ी ना ही मुस्तक़बिल, तुम्हारे हाथों... बदल सकेगा.
क्यों खेलते हो मेरी अना से, क्या इससे हासिल कुछ हो सकेगा?

जिसे मेरी बेकसी समझते, वो मेरी ताकत सलाहियत है,
नही है जन्नत की मुझको ख्वाहिश, मुझे है मालूम खुदा यहीं है.

10

अल्फ़ाज़

सफ़र पर निकालने के बाद क्यूँ मेरा हाल पूंछते हो?
हाशिये पे रखते हो, और कहते हो कि याद करते हो.

मुनासिब समझो तो!! हमें भी, तवज्जो दे देना,
कुछ पल फुरसत के हमारे नाम भी कर देना.

साथी ना कहो दोस्त भी नहीं, रक़ीब ही समझ करो,
कम से कम किसी बहाने से मेरी याद कर लिया करो.

अब भी कुछ नमक बाकी है तेरी- मेरी दोस्ती के बीच ऐ यार,
इतनी भी क्या किफ़ायत है की होने नहीं देते अपने दीदार!!

चलो बहुत हुआ... अब और नहीं छेड़ेंगे तुम्हें,
मुस्कुराहट तो झेल नहीं पाते, आंसू... क्या झेलेंगे यह लम्हे.

तेरी और मेरी झुर्रियों में बहुत सी दास्ताने छिपी-सिमटी हैं,
ये दिखाने की चीज़ नहीं हैं, यह तो दौलते-बेशकीमती हैं .

अभी रुखसत कर दे फिर मिलेंगे यह वादा है...
बाँट लेंगे आधा-आधा, ना तेरा कम हो, ना मेरा समय ज़्यादा है.

11

हर एक चेहरा डरा रहा है

यूं हसरतों को ज़ुबाँ ना देना, ज़ुबाँ मिली तो फ़िसल जाएगी,
जो हमकदम बन साथ चल तो, तेरी ये हस्ती बदल जाएगी.

मगरूर दिल से ना कैफ़ियत दे, नहीं ये तेरी असलियत है,
रुखसारे परत जो उतार गई, तो सारी हक़ीकत बदल जाएगी.

यह ख्वाहिशें और यह जुस्तजू सब, फरेबी जुमलों से तर-बतर हैं
हवा की दस्तक के व्लवले से सारी बसाहट उजड़ जाएगी.

यकीन टूटा तेरी वफ़ा का, तेरी इस बज़्जते-ए- ज़ुबाँ का
है इंतज़ारी में दिन गुज़रते, फिजाँ मुल्क की बदल जाएगी.

चिराग जिनको किया था रौशन, वही ये महफ़िल जला रहे हैं
आतिशे-वहशत जो गर यूं फैली, तेरा भी घर ये निगल जाएगी.

ना दोस्ती का सिला 'अणिमा' ना रिश्तों की महक बची है,
हर एक चेहरा डरा रहा है, कब किसकी सीरत बदल जाएगी.

12

यह जीवन बहता पानी है

पतझड़ में जब बूढ़े पत्ते, सूखेंगे झड़ जाएंगे,
तब नई कोंपलें फूटेंगी, और नए फूल खिल जाएंगे.

फिर नई बहारें... नई उम्मीदें... नए रंग दिखलाएंगे,
यह जीवन बहता पानी है, कल में जो थे गुम जाएंगे.

है यही सत्य, सनातन है, हम भी इक दिन खो जाएंगे,
नव-जीवन में रंगत भरकर, खुशबू अपनी दे जाएंगे.

ले बंधी मुट्ठियाँ जन्मे थे, पर हाथ पसारे जाएंगे,
ना लेकर हम कुछ आए थे, ना ही कुछ लेकर जाएंगे.

जो कुछ जिससे छीना झपटा, सब यहीं छोड़ कर जाएंगे,
जिस पंच तत्व से निर्मित हम, उसमे विलीन हो जाएंगे.

13

ताबूतों के तख्त

पीछे से सब घात लगाए बैठे हैं,
और हाथी के दांत लगाए बैठे हैं.

ढोलक और मंजीरे बेंच दिए सारे,
घुँघरू की दूकान सजाये बैठे हैं...

कागज के फूलों में इत्र की खुशबू भर,
बागीचे... गुलाब सजाये बैठे हैं.

दुल्हन संग बाराती सारे भाग गए,
दूल्हे क्यों सेहरे सजाये बैठे हैं.

अब देखो मुरदों की शामत आई है,
ताबूतों के तख्त बनाये बैठे हैं.

शील और शराफत छोड़ी संतों ने,
अपराधी आश्रम बनाये बैठे हैं.

यहाँ हारती दिखती है जनता सारी,
प्रजातंत्र की... आस लगाये बैठे हैं.

14

नारी हिन्द की

नारी अभिमान है, हर घर का सम्मान है,
पूज्या है आराध्या है, आदि है अनंत है...
नारी के बिना यह जीवन क्लांत है,
हर यात्रा !! नारी से शुरू होकर, नारी पर समाप्त होती है...
यह वो रूप है जो, साथ रहता जीवन पर्यंत है.
नारी विश्वास है... प्यार का एहसास है,
स्निग्ध हो या कोमल, या झुर्रियों वाला..
हर रूप उसका कर देता है मत्तवाला...
नारी ना परेशान है और, ना ही उसे थकान है,
दो कदम आगे चलने वाली, वो शिव की, पहचान है.
क्यों ??आंक रहे हो उसे!! महिला सशक्तिकरण का
नारा देकर!!
प्रकट कर रहे हो, वो अबला है अशक्त है...
बार-बार, यह कह कर.
नारी तो ऊर्जा है, सर्व शक्तिमान है,
नारी में तो बसा, यह पूर्ण हिंदुस्तान है.
जिन्हे नारी दिवस मनाना है, वो शौक से मनाएं,
मगर याद रहे की शेष, तीन सौ चौसठ दिन भी
वो नारी को ना भुलाएं...

15

बसता शिकायतों का

इक सपना मीठा-मीठा सा सबकी आँखों ने देखा है,
उस सपने में हँसते-गाते हमने अपनों को देखा है.
वो सूती कच्चे धागों के, रिश्ते थे, पर वो पक्के थे...
रंगीन रेशमी धागों में गांठें पड़ जाते देखा है.

जब तक दो सूखी रोटी थीं, सब मिल-बाँट कर खाते थे,
इक ही थाली होती घर में, पर फूले नहीं समाते थे.
हो आधा पेट भरा लेकिन, सबको मुसकाते देखा है...
इक सपना मीठा-मीठा सा सबकी आँखों ने देखा है.

अब रोज़, नई थाली घर में, और पकवानों का मेला है,
अपनों का साथ नहीं होता और मुंह का स्वाद कसैला है.
इन खाली सुंदर बर्तन को लड़ते-टकराते देखा है...
इक सपना मीठा-मीठा सा सबकी आँखों ने देखा है.

ना रोज़ मुलाकातें होतीं ना आपस में बातें होतीं,
ना दर्द किसी के बंटते हैं, ना आँखें ही अब नम होती.
बस दुनिया दीन-दिखावे को उन्हें गले लगाते देखा है...
इक सपना मीठा-मीठा सा सबकी आँखों ने देखा है.

दिल पर रखकर एक हाथ ज़रा, खुद से ही तुम, इतना पूंछों,
क्या कभी किसीकी खुशियों में रत्ती भर भी है साथ दिया?
मन भर शिकायतों का बस्ता बस सदा खोलते देखा है...
इक सपना मीठा-मीठा सा सबकी आँखों ने देखा है.

16

कलम और स्याही

स्याही जब पिघलती है... शब्द बन निकलती है,
दोमुही तलवार बनकर, सत्य का दामन पकड़कर,
जिस पे भी आघात करती, उसकी है हालत बिगड़ती,
सरे आम बोलती है, भेद सबके खोलती है...
होंगे वो नासमझ कितने!! जो इसकी ताक़त ना समझे,
कलम शर से बींधती है, हर किसीको चीन्हती है,
जो डगर से है भटकता, वो कलम का ग्रास बनता,
ज़ब्त कैसे कर सकोगे, कफ़स में कैसे रखोगे?
यह नही है भाट-चारण, सदा दे तेरे उदाहरण...
यह जकड़ती भींचती है, बन के रस्सी खींचती है,
यह करती उसकी गुलामी, जो सुखनवर महाज्ञानी...
जो किसीकी नहीं सुनते, इबादत कलम की करते,
मुक्त लेखन लेखनी को... वो सदा प्रणाम करते,
स्याही की सरिता बहेगी, वो मुखर होकर रहेगी,
वो किसीसे ना डरेगी वो किसीकी ना सुनेगी,
झूठ को उखाड़कर वो सत्य का ही साथ देगी.

17

मुर्दे खड़े हो जाएंगे

मत कुरेदो, परतों को, मुर्दे खड़े हो जाएंगे...
कल जो उजड़े थे शहर वो, फिर से उजड़ जाएंगे.

जिनने लिक्खी थी इबारत, वो ज़मीं-दोज़े हुए,
फुरकत-ए-इंसानियत हम, कितनों को? दफ़नाएंगे.

हाथ जब भी दोस्ती का, बढ़ाया था यार ने...
दरमियाने दोस्ती के, मज़हब आड़े आ गए.

क्या किसीने भी कभी तारीख लिक्खी आम की?
कल भी थे वो हाशिये पर, आज फिर हो जाएंगे.

यह नशा है शख्सियत का... ताकत और गुरूर का,
जब-जब सर उठाएगा, मुर्दे उखाड़े जाएंगे.

18

रेत के हसात

मुख्तसर सी ज़िंदगी में, तल्खियों की तहों में,
शिकवे और शिकायतों के, बोझ तले दब गए.

रश्क करते थे हमारी किस्मत-ए- किरदार से,
सुना है कि हसद में वो, राख बन कर रह गए.

कश्तियां पीछे जलाकर हम चले आए यहाँ,
साहिलों की रेत के हसात, बन कर रह गए.

दोस्त तेरी दोस्ती का क्या सिला हमको मिला?
शहर इस अनजान में...रकीब बन कर रह गए.

गुनचए-गुलाब सबकी किस्मतों मे, हैं कहाँ?
मजाज़-ए -हक़ीकत की हम, हाथ मलते रह गए.

ताब ए जिगर छुपाने में, उम्र यह तमाम की,
हिज्र में उदासियों के, बस सहारे रह गए.

यूं 'अणिमा' ज़िंदगी ना हो किसीकी भी गुज़र,
गैरतो-ईमान गरीबों की शौकत रह गए।

19

फिजाँ बदल गई

रफ़ाक़त बनाते उनसे यह ज़ुर्रत नहीं हुई,
फिर उनसे यह कहने की भी हिम्मत नहीं हुई.

अंजाम तक तो ले गई परवाज-ए-मुहब्बत,
मौका-ए-दस्तूर असीरी सी चुभ गई.

बेखौफ़ बेधड़क निशेमन सजा लिए,
उनकी वो बेरुखी मेरी किस्मत बदल गई.

गुलो-गुलाब चुनके यह चमन सजाया था,
खुशियां कब खाक बन गई खबर नहीं हुई.

यह अहद था कि ना कभी उनको भुलाएंगे,
वह रूबरू थे निगोड़ी आँखें यह मुंद गईं.

अब सोंचते हैं ‘अणिमा’ दुआओं में सही,
वो याद रखें कह दूँ पर फिजाँ बदल गई.

20

यादों के लिहाफ़

जो अगर लिहाफ़ यादों के बिका करते यहाँ,
बदल देती मैं उन्हे हर बार मैला होने पर.

चिलमनों की आड़ में से झाँकते चेहरे यहाँ,
बेनकाब हो ही जाते हैं उतैला होने पर.

किसको है यह इल्म कि कब कौन गुज़रा यहाँ से,
दीख पड़ते हैं निशां मन के अकेला होने पर.

यह नहीं है सत्य कि सबको समानता मिले,
छोड़ देते हैं सभी फल के कसैला होने पर.

कौन किसका साथ देता है यहाँ संसार में,
साया भी अपना नहीं दिखता अंधेरा होने पर.

प्राण और ऊर्जा भी छोड़ जाते हैं शरीर,
चल पड़े हम भी 'अणिमा' थैला खाली होने पर.

21

दरिया-ए- अश्क

बादल की तरह वो मेरी किस्मत पे छा गए,
दरिया-ए- अश्क ग़म के साथ मुफ़्त आ गए.

उदासियों ने भी मेरा दामन पकड़ लिया,
लगता है सबके अश्क, मेरे हिस्से आ गए.

दिल और दिमाग की फिजूल रस्साकशी में,
हम अर्श से गिरे, फर्श में समा गए.

दरियादिली है आपकी कहते थे जो कभी,
दुश्मन की आस्तीन में पनाह पा गए.

ना दोस्त हैं यहाँ, ना कोई, रक़ीब है,
इस झूठ और फरेब से हम तंग आ गए.

यह आशियाना भी किसी कफ़स से कम नहीं,
जिद थी परवाजे फलक की, उड़ना भुला गए.

है ताइरे- असीर 'अणिमा' यह हौसले,
हर-सू बचा ना जोश शरारे बुझा गए.

22

मिन्नत ना कर

इस सुलगती आग को हवा कहाँ से मिल रही है,
कोयले पर जमी रख कहाँ से पिघल रही है.

मता-ए-नियाज़ मेरी भी कभी की चुक गई है,
जोशे-वहशत तिशनगी की आरज़ू उभर रही है.

हो चुका है खत्म, मशके-सितम अब हिज्रो-विसाल,
कारवां साँसों का तय कर ज़िंदगी फिसल रही है.

सोज़िश -ए-दर्दे-दिले को असीरी में बांधकर,
गुमशुदा आवाज़ मेरी दर पे दस्तक कर रही है.

इक तेरी रहमो-नुमाई ‘अणिमा’ मिन्नत ना कर,
ज़र्रे-ज़र्रे मुंतशिर वजूद -ए-ताक़त बढ़ रही है.

शब्दों के अर्थ कविता के क्रमांक से

1. सरगोशियाँ = कानाफूसी भव= संसार विलय= घुलना 2. दस्तूर= प्रथा , रीति कायल= मान लेने वाला अहमक=मूर्ख एतबार= भरोसा, विश्वास पाक-साफ= निर्मल, विशुद्ध मयकदा= शराब खाना, मदिरालय फाख्ता= कबूतर कफ़स= पिंजरा मुतमईन= निश्चिंत, बेफिक्र नासूर= घाव से मवाद रिसना 3. फिज़ा= हवा, प्रकृति मुसलसल= लगातार, क्रमबद्ध कामिल= समाप्त, खत्म उम्र दराज़= लंबी ज़िंदगी तिशनगी= प्यास, लालसा ज़ीस्त= जीवन, ज़िंदगी फकत= सिर्फ, केवल, बस इतना ही तुरबत= कब्र 4. रवायत= पारंपरिक, रीति-रिवाज शोखियाँ= चुलबुलापन, नटखटपन फ़ना= लीन होना, पूर्ण विनाश चश्मे-मयगूँ = मद भरी आँखें मयकशी= मदिरा पान मुंतशिर=बिखरा हुआ, तितर-बितर रुसवा= बदनाम, बेइज़्ज़त ब-अन्दाज़-ए-खुमार= नशे का कोई अन्दाज़ नहीं लगना 5. जतन = कोशिश, प्रयत्न विरले= बहुत कम सनातन= ना आदि ना अंत ज़ख्म= घाव	6. तिल का ताड़ = मामूली सी बात को बढ़ा चढ़ा कर बताना नगण्य= अत्यंत तुच्छ , जिसकी गणना ना हो सहिष्णुता= सहनशीलता 7. धिक्कार= भर्त्सना, लानत निर्वासित= देश से निकाले हुए छलावा= भ्रांति, माया, भ्रम 8. तड़ाग= पोखर मंडूक= मेंढक कूप= कुंआ देगची= बड़ा बर्तन सालन बनाने के लिए बाखबर= जानकारी, सचेत 9. एतमाद= विश्वास, भरोसा टीस = कसक, हूक, रह रह कर उठने वाली पीड़ा खलिश= चुभन, कसक तक़दीर = भाग्य, किस्मत ताबीर= कर्मों का फल माज़ी= अतीत, बीता हुआ मुस्तक़बिल= भविष्य, आगे आने वाला अना= गर्व, स्वाभिमान बेकसी= दीन , असहायता सलाहियत= योग्यता, पात्रता 10. अल्फ़ाज़= शब्द सफ़र= यात्रा हाशिये= किनारा कर लेना, अलग कर देना मुनासिब= उचित तवज्जो= ध्यान देना रक़ीब= प्रतिद्वंदी, प्रतिस्पर्धी किफ़ायत= बचत, कंजूसी दीदार= दर्शन, साक्षात्कार लम्हे= पल दास्तानें= कहानियाँ रुखसत= विदाई

11. हसरत= कामना जुबां =कथं, बात मगरूर= अभिमानी, घमंड कैफ़ियत= विवरण, वर्णन, व्याख्या रुखसार= गाल, कपोल हक़ीकत= असलियत, सच जुस्तजू= खोज, तलाश वलवाले= आवेश, शोरगुल वफ़ा= निष्ठा, वचन बज़्जते-ए-ज़ुबाँ= अधम शब्दों का, नीच बोली का आतिशे-वहशत= आग की तरह का पागलपन, उन्माद सीरत= आदत, स्वभाव **12.** कोपलें= नए पत्ते, कल्ले विलीन= लुप्त होना, अदृश्य **13.** हाथी के दांत= ऊपर से और अंदर से कुछ और घात= प्रहार के मौके की तलाश इत्र= खुशबू ताबूत= मृत शरीर रखने का संदूक, कॉफ़िन **14.** अभिमान= अपनी प्रतिष्ठा, मर्यादा सम्मान= आदरपूर्ण, सम्मानपूर्ण पूज्या= आदर योग्य आराध्या= पूजनीय स्निग्ध= स्नेह युक्त, प्रेममय, चिकना **15.** गाँठे= गिरह, ग्रन्थि, उलझाव कसैला= खाने में अच्छा ना लगने वाला, कषाय **16.** आघात= प्रहार सारेआम= सार्वजनिक, सबके सामने शर= बाण, तीर डगर= मार्ग, रास्ता भाट-चारण= चाटुकार ग्रास= निवाला, कौर इबादत= पूजा मुक्त= स्वतंत्र, आजाद	**17.** ज़मीं–दोज़े= दफन हो गए, मृत्यु को प्राप्त हो गए फुरकत-ए-इंसानियत= इंसानियत की गैरहाज़िरी फुरकत= वियोग दरमियान= बीच में, मध्य में मजहब= धर्म शख्सियत= व्यक्तित्व, पहचान गुरूर= घमंड **18.** मुख्तसर= छोटी सी, संक्षिप्त तल्खियों= बदज़ुबानी, चिड़चिड़ापन शिकवे= उलाहना, तंज़, ताने रश्क= जलन, ईर्ष्या किस्मत-ए-किरदार= भाग्य का फल हसद= ईर्ष्या कश्ती= नाव साहिल= सागर या नदी का किनारा हसात= कंकड़ गुंचए-गुलाब= गुलाब की कली मजाज-ए-हक़ीकत= सच का दावा ताब-ए-जिगर= जिगर में उठती जलन या हूक हिज्र= वियोग गैरतो-ईमान= हया और भरोसा शौकत= ठाठ-बाट **19.** रफाकत= मेलजोल ज़ुर्रत= हिम्मत अंजाम= नतीजा परवाज़-ए-मुहब्बत= प्यार की उड़ान दस्तूर= रिवाज़ असीरी= कैद निशेमन= घर, घोंसला बेरुखी= उपेक्षा, नाराज़ी खाक= धूल, मिट्टी अहद= वादा, संकल्प रूबरू= आमने-सामने, समक्ष आड़= छुपकर, पर्दे के पीछे से मैला= गंदा बेनकाब= बेपर्दा

20.

लिहाफ़= ओढ़ने की चादर, रज़ाई
चिलमन= पर्दा
उतैला= उतावला, धैर्यहीन
निशां= चिन्ह
इल्म= जानकारी, मालूमयात
साया= परछाई
ऊर्जा= शक्ति

21.

दरिया-ए- अश्क= आंसुओं का समुद्र
अश्क= आंसू
दामन=
रस्साकशी= खींचातानी
अर्श= आसमान
फर्श= ज़मीन
दरियादिली= विशाल हृदय वाला
पनाह= शरण
फरेब= झूठ, धोखा
आशियाना= बसेर, घर
परवाज़े-फलक= आसमान की उड़ान
ताइरे- असीर= कैद का पंछी
हौसले= साहस, सामर्थ्य
हर-सू= चारों तरफ
शरारे= चिंगारी

22.

सुलगती= भीतर ही भीतर जलना, बिना ज्वाला के जलना
मता-ए-नियाज़= विनय की पूंजी
चुक जाना = खत्म होना
जोशे- वहशत= दरिंदगी
तिशनगी= प्यास
आरज़ू = इच्छा
मशके-सितम= अत्याचार का अभ्यास
हिज्रो-विसाल= विरह और मिलन
कारवां= समूह, काफिला
सोजिशे= जलन, दर्द, पीड़ा
असीरी= कैद, पिंजरा
रहमो-नुमाई= दया का दिखावा
मिन्नत= याचना, गिड़गिड़ाना

मेरी अन्य रचनायें:

“**रेत के हसात**” के आलावा मेरी अन्य कई पुस्तकें जो अलोक प्रकाशन व्दारा प्रकाशित की गई वे हैं **स्पंदन, अंश, बिखरी-बिखरी, सूत्रधार, सत्य से साक्षात्कार एवं The Catastorphe**

इनके अलावा मैंने **Environmental Pollution & Climate Change** नामक पुस्तक भी अलोक प्रकाशन के माध्यम से प्रकाशित की है जिसमें प्रदूषण व बदलते मौसम पर महत्वपूर्ण जानकारियां बड़े सरल तरीके से उपलब्ध करायी गई हैं.

पाठकों से अनुरोध है की इन पुस्तकों का लाभ न सिर्फ स्वयं उठायें बल्कि मित्रों एवं बच्चों को भी पढने के लिए प्रेरित करें क्योंकि पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी मित्र होती हैं.

डॉ अणिमा उपाध्याय